कुंडली से जानें रिश्तेदारों को:

हम बात करेंगे भावों के वर्गीकरण के बारे में।

- **केंद्र भाव** जो होते हैं उनको शुभ माना जाता है। ये परस्पर 90 डिग्री की दूरी पर स्थित होते हैं। केंद्रों में कौन-कौन से भाव होते हैं? प्रथम भाव, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव। ये चार केंद्र स्थान होते हैं। केंद्र में स्थित होने वाले ग्रह प्रबल माने जाते हैं। प्रथम भाव व्यक्ति का स्वयं का होता है। चतुर्थ भाव माता का होता है। सप्तम भाव वैवाहिक जीवन का होता होता है। इन केंद्रों में भी दशम भाव अधिक बलवान माना जाता है जो व्यवसाय का होता है।
- **त्रिकोण भाव** को भी शुभ माना जाता है। इनमें प्रथम, पंचम व नवम भाव होते हैं। परस्पर 120 डिग्री की दूरी पर स्थित होते हैं। प्रथम भाव स्वयं का होता ही है। पंचम भाव जातक की कलात्मकता का होता है। नवम भाव धर्म का व भाग्य का होता है। ये भाव अच्छा फल प्रदान करते हैं। केंद्र और त्रिकोण भाव का संबंध होता है तो उसको राजयोग की श्रेणी में रखा गया है।
- **उपचय भाव** कौन से होते हैं? तृतीय, षष्ट व एकादश भाव को उपचय भाव कहते है। ये भाव कारकत्व में वृद्धि करते हैं, अर्थात अनिष्ट फल प्रदान करते हैं। इनमें मंगल, शनि, सूर्य, राहु आदि स्थित हो तो अच्छे माने जाते हैं। इनमें पाप ग्रह स्थित होने पर इन भावों के नकारात्मक प्रभावों को कम कर देते हैं।

- **धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष** ये चार पुरुषार्थ बताए गए हैं। ये पुरुषार्थ कुंडली के कौनसे भाव के द्योतक हैं? इस पर चर्चा करते हैं।
- प्रथम, पंचम और नवम भाव को **धर्म त्रिकोण** कहते हैं।
- द्वितीय, षष्ट और दशम भाव को **अर्थ त्रिकोण** कहते हैं। ये बौद्धिक और सांसारिक सुखों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
- **काम त्रिकोण** में तीसरे, सातवें और ग्यारहवें भाव को लिया गया है।
- चतुर्थ, अष्टम और द्वादश भाव को **मोक्ष त्रिकोण** कहा जाता है। मोक्ष की प्राप्ति व धार्मिक कार्य से इन भावों का संबंध होता है।

- षष्ठ अष्टम और द्वादश भाव को **दुःस्थान** कहते हैं। ये भाव संघर्ष देते हैं। बाधा देते हैं व कष्ट प्रदान करते हैं।
- द्वितीय और सप्तम **मारक भाव** होते हैं, क्योंकि ये आयु भाव से 12 वें होते हैं। अष्टम भाव आयु भाव होता है। उससे 12 वां सप्तम स्थान होता है। भावात् भावम् के सिद्धांत के अनुसार अष्टम से अष्टम अर्थात तृतीय भाव भी आयु का होता है। अतः उससे 12 वां भाव अर्थात द्वितीय भाव भी मारक भाव होता है।

जन्मकुंडली से व्यक्ति अपने **संबंधियों** के बारे में यदि जानना चाहे तो उसके लिए कौन सा भाव होता है, हम इस पर विचार करते हैं।

- किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली के नवम भाव से उसके पिता के बारे में जाना जा सकता है।
- व्यक्ति के सप्तम भाव से उसकी पत्नी के बारे में जाना जा सकता है।
- महिला की कुंडली में सप्तम भाव से उसके पति के बारे में जाना जा सकता है।

- चतुर्थ भाव माता का होता है। अतः चतुर्थ से सप्तम अर्थात दशम भाव से पिता के बारे में जाना जा सकता है।
- तृतीय भाव छोटे भाई बहनों का होता है। अतः उससे सप्तम अर्थात नवम भाव से छोटे भाई की पत्नी तथा छोटी बहन के पति के बारे में जाना जा सकता है।
- पंचम भाव संतान का होता है। पंचम से सप्तम अर्थात एकादश भाव से पुत्र वधू तथा दामाद के बारे में जाना जा सकता है।
- चतुर्थ भाव माता का होता है। चतुर्थ से तृतीय अर्थात षष्ट भाव माता के छोटे भाई बहन का होता है, अर्थात मामा और मौसी का भाव होता है।
- चतुर्थ भाव माता का होता है। चतुर्थ से चतुर्थ अर्थात सप्तम भाव से माता की माता अर्थात नानी के बारे में जाना जा सकता है।
- चतुर्थ से दशम भाव अर्थात कुंडली का प्रथम भाव नाना के बारे में सूचना देता है।
- नवम भाव पिता का होता है। उससे तृतीय भाव अर्थात एकादश भाव से उनके छोटे भाई बहन अर्थात चाचा व बुआ के बारे में पता चलता है।

- दशम भाव भी पिता का होता है। दशम भाव से दशम भाव अर्थात पिता के पिता अर्थात जातक के दादा के बारे में उससे पता चलता है जो कि कुंडली का सप्तम भाव होता है।
- उस सप्तम से सप्तम अर्थात लग्न भाव से दादी के बारे में पता चलता है।

- एकादश भाव बड़े भाई व बहन का होता है। उससे सप्तम अर्थात पंचम भाव से बड़े भाई की पत्नी अर्थात भाभी तथा जीजा का पता चलता है।
- पिता का भाव नवम तथा उससे ग्यारहवां भाव पिता के बड़े भाई का होता है। अर्थात व्यक्ति के ताऊ का भाव होता है, जो कुंडली का सप्तम भाव होता है।
- यदि दशम भाव से गणना करें तो अष्टम भाव होता है परंतु पिता के लिए नवम भाव ही सटीक होता है।
- उस सप्तम भाव से सप्तम भाव अर्थात लग्न भाव ताई का होता है।
- जैसा कि मातृ भाव चतुर्थ से तृतीय अर्थात षष्ट भाव मामा का होता है, तो षष्ट से सप्तम अर्थात 12वां भाव मामी और मौसा का होता है।
- सप्तम भाव पत्नी का होता है। उससे चतुर्थ अर्थात दशम भाव सास का होता है। दशम से सप्तम भाव ससुर का होता है।
- सप्तम भाव पत्नी का होता है। उससे तृतीय अर्थात नवम भाव सालों और सालियों का होता है।
- सप्तम से एकादश भाव अर्थात पंचम भाव बड़े साले और सालियों का होता है।

- सप्तम भाव पति का होने के कारण उससे एकादश भाव अर्थात पंचम भाव जतिका के जेठ का होता है और एकादश भाव जेठानी का होता है। इसी प्रकार से सप्तम से तृतीय अर्थात नवम भाव देवर का होता है और उससे सप्तम अर्थात तृतीय भाव देवरानी का होता है।

इस प्रकार से आप अनेक संबंधियों के बारे में अपनी जन्म कुंडली के आधार पर पता कर सकते हैं। भाव, भावेश और भाव कारक को देखकर तथा दशा अंतर्दशा को देखकर कुंडली का विश्लेषण कर सकते हैं।

===